AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

बी.एड. महाविद्यालयों में अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन

ORIGINAL ARTICLE

Authors
आशा गुप्ता
शोधार्थी, शिक्षा विभाग
डॉ. वन्दना ठाकुर
पर्यवेक्षक
मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय
यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्नोलॉजी वाटिका, जयपुर,
राजस्थान, भारत

शोध सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन में बी.एड. महाविद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन किया गया है। शिक्षक शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षक न केवल विषय वस्तु का ज्ञान कराते है बल्कि भावी शिक्षकों के व्यक्तित्व निर्माण में योगदान करते है। शिक्षण की प्रभावशीलता से तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जिसमें शिक्षक विद्यार्थियों को प्रेरित करते हैं। समझदारी से विषय वस्तु को विभिन्न शिक्षण सहायक सामग्रियों के माध्यम से पढ़ाते है और अधिगम परिणामों में सुधार लाते हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जायेगा कि बी.एड. महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक कितने प्रभावी है, और उनकी शिक्षण रणनीतियाँ व्यवहार मूल्यांकन तकनीक आदि कितनी उपयोगी सिद्ध हो रही है।

मुख्य शब्द

बी.एड. महाविद्यालय, अध्यापक, शिक्षण, प्रभावशीलता.

प्रस्तावना

शिक्षण को प्रभावित करने वाले कई कारक है, जिसमें शिक्षक, शिक्षार्थी, शिक्षण सामग्री, सीखने का माहौल और संस्थान शामिल है। शिक्षक को विषय वस्तु में दक्षता, शिक्षण कौशल और संचार कौशल विशेष कर बी.एड. महाविद्यालयों में प्रशिक्षु होते हैं, इन्हें यह सब चीजें बड़ी बारीकी से सीखानी पड़ती है और यह प्रभावी तभी होता है जब शिक्षक अनुभवी और प्रशिक्षण में दक्ष होते है।

सामान्यतः किसी बी.एड. महाविद्यालय की प्रभावशीलता का अनुमान इस बात से लगाया जाता है कि छात्रों का समाज में भूमिका किस प्रकार है, वे किस हद तक अपने प्रोफेशन में सामंजस्य स्थापित कर पाए हैं, हो सकता है कि कुछ शिक्षक अपने शिक्षण से प्रभाव पैदा नहीं कर पा रहे हो लेकिन कुछ शिक्षण से प्रभाव पैदा करने में सफल हो पाए। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि उन कारको को चिन्हित करने का जो शिक्षण में बाधा उत्पन्न कर रहा हो, क्योंकि प्रभावकारी शिक्षण, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है।

वर्तमान में छात्रों की अधिगम सम्प्राप्ति के आंकलन के लिए किए जाने वाले प्रयासों से विद्यार्थियों की अधिगम स्थिति की जानकारी तो हो जाती है, परंतु उससे पूर्णता ज्ञान नहीं होता कि इस परिणाम के पीछे शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता का क्या योगदान रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. बी.एड. महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण विधियों की पहचान करना।
2. शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना।
3. विद्यार्थियों को दृष्टि कोण से शिक्षण की गुणवत्ता का विश्लेषण करना।
4. प्रभावी शिक्षण में बाधा डालने वाले कारकों की पहचान करना।

अध्ययन विधि

अध्ययन के लिए सर्वेक्षण शोध विधि का सहारा लिया जाएगा जिसमें मुख्य रूप से प्रश्नावली/ अनुसूची के माध्यम से आंकड़ों को एकत्रित करने का प्रयास किया जाएगा।

शोध अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध में अध्ययन का सीमांकन निम्नलिखित प्रकार से किया गया है:

1. प्रस्तुत शोध अध्ययन करौली जिले तक सीमित है।
2. हिंडौन सिटी के कुछ बी.एड. कॉलेज के शिक्षकों को ही शामिल किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में करौली जिले के शहरी क्षेत्र में स्थित बी.एड. महाविद्यालय एवं ग्रामीण क्षेत्र से बी.एड. महाविद्यालय का चयन 100 शिक्षको को न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

शोध उपकरण

शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करने के लिए कुमार एवं मुथा 1999 द्वारा निर्मित शिक्षण प्रभावशीलता स्केल का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी विश्लेषण एवं परिणाम

शिक्षण प्रभावशीलता से संबंधित प्रदत्तों का विश्लेषण।

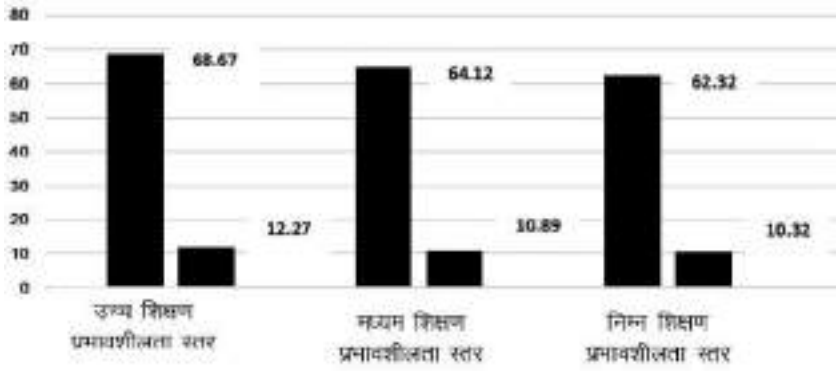

उच्च तथा मध्यम् स्तर की शिक्षण प्रभावशीलता दर्शाने वाले शिक्षकों के समूह में सार्थक भिन्नता पायी गयी। उच्च स्तर की शिक्षण प्रभावशीला दर्शाने वाले शिक्षकों के समूह के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर मध्यमान 68. 67 मध्यम स्तर की शिक्षण प्रभावशीलता दर्शाने वाले शिक्षकों के समूह की 64.72 तथा निम्न शिक्षण प्रभावशीलता दर्शानेवाले शिक्षको के समूह की मध्यमान 62.32 पाया गया।

तालिका में करौली जनपद के बी.एड. महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का क्षेत्रीय आधार पर मध्यमान, मानक विचलन व प्रमाप विचलन को दर्शाया गया है, जिसमें जिसमें ग्रामीण शिक्षको के प्रभावशीलता का माध्यमान 298.01 (50.14) प्राप्त हुआ है जबकि शहरी शिक्षकों के प्रभावशीलता का मध्यमान एवं

मानक विचलन 301.88 (36.62) प्राप्त हुआ है।

निष्कर्ष

करौली जनपद के बी.एड. महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का लैंगिक आधार पर सार्थक अंतर पाया गया है। वहीं शहरी क्षेत्रों के अंतर्गत कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में भी सार्थक अंतर देखा गया।

शिक्षको की प्रभावकारिता, योग्यता, अनुभव को शिक्षा के साथ – साथ स्कूलो की भविष्य की उपलब्धि के लिए महत्वपूर्ण कारको के रूप में स्वीकार किया गया है। शिक्षको की योग्यता और अनुभव उनकी पेशेवर प्रभावशीलता के साथ दृढ़ता से जुड़ा हुआ है।

बी.एड. महाविद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण प्रभावशीलता योग्य एवं अनुभव शिक्षकों की तुलना में शिक्षण प्रभाव शीलता कुछ हद तक सामान्य स्तर का पाया गया क्योंकि ज्यादातर शिक्षक अपने शिक्षण में परंपरागत तरीके अपना रहे हैं बीएड महाविद्यालय में नवाचार तकनीकों के प्रयोग का अभाव है अगर कुछ हद तक उपलब्ध भी है तो शिक्षक शिक्षण कार्य करते समय आधुनिक संसाधनों का प्रयोग नहीं करते शिक्षकों में आईसीटी जैसी तकनीकी में कुशल न होने के कारण शिक्षक अपने शिक्षण में प्रभाव शीलता उत्पन्न नहीं हो पा रहा शिक्षण कार्य करते समय वही परंपरागत तरीके अपनाते हैं और वहीं कुछ महाविद्यालय में शिक्षण कार्य करते समय अपने शिक्षण में आईसीटी नवाचार तकनीक का प्रयोग करते हैं और वह शिक्षण में पीपीटी, स्मार्ट बोर्ड ,प्रोजेक्टर के माध्यम से शिक्षण कार्य करते हैं इसका छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव देखा गया।

संदर्भ सूची

1. अमनदीप और गुरूप्रीत (2005) *शिक्षण योग्यता के संबंध में शिक्षक प्रभावकारिता का एक अध्ययन,* एपेक्स विश्वविद्यालय ,राजस्थान।
2. गार्डन, थामस (2003) *पेरेंट इफेक्टिवनेस ट्रेनिंग,* श्री रिवर्स प्रेस, अमेरिका, पृ. 344।
3. जैन, पी. (2018) शिक्षको के प्रशिक्षण में प्रौद्योगिकी का उपयोग आधुनिक शिक्षक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, Vol. 14 (1) पृ. 34।
4. सिह, अरूण कुमार (2013) *शिक्षा समाजशास्त्र, मनोविज्ञान में शोध विधियाँ,* मोतीलाल, वनारसी दास, दिल्ली।
5. सुलेमान, मोहम्मद (2007) *मनोविज्ञान समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ,* जेनरल बुक एजेंसी, चौहट्टा, पटना।

——==00==——